## आरती श्रीरामाची १३२

जय देव जय देव आयोध्या भूपा। आरती ओवाळू रिवकुल दीपा।।ध्रु.।। मस्तिकं मुगुट रत्नखचित जडोनी। शोभती पाचूचे चहूंकडोनी। कानी कुंडल याचा तेज पडोनी। लोपोनी रिवशशी राहे जडोनी।।१।। लावण्यरूप राम अति गोरा। त्याविर नेसे पीतांबर कोरा। अंगुली दश मुद्रा शोभती करा। कंठी पदक याचा झळकतो हीरा।।२।। धनुष्य किरं तेजें झळके झळाळा। कस्तूरी टिळक रेखियले भाळा। वामांगीं शोभे जनकराजबाळा। भरत शत्रुघ्न किर चौर ढाळा।।३।। छत्र घेऊनि किरीं धरी सौमित्र। सन्मुख उभा असे वायुपुत्र। शोभे सिंहासनीं राजीवनेत्र। माणिक ध्याये तया दिनरात्र।।४।।